१०. बातें प्रेमचंद की

– अवधनारायण मुद्‌गल

परिचय

जन्म : १९३३, आगरा (उ.प्र.)
मृत्यु : २०१५, (नई दिल्ली)
परिचय : अवधनारायण मुद्‌गल हिंदी साहित्य के वरिष्ठ चिंतक, लेखक, संपादक एवं यात्रा लेखक थे । आपने 'सारिका' पत्रिका का २७ वर्षों तक संपादन किया । छंदबद्‌ध और छंदमुक्त दोनों प्रकार की कविताएँ आपने लिखीं हैं । आपका रचना संसार लघुकथाओं, व्यंग्यों, निबंधों तक फैला हुआ है । आपको साहित्य अकादमी द्‌वारा सम्मानित किया गया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'वामा' एवं 'छाया-मसूर', 'पत्रिकाओं का संपादन', 'मेरी कथा-यात्रा', 'कबंध' (कहानी-संग्रह), 'मुंबई की डायरी', 'एक फर्लांग का सफरनामा' आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत आलेख में मुद्‌गल जी ने प्रेमचंद के गाँव, उनके बचपन, उनके शौक आदि का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है । प्रेमचंद के बचपन की शरारतें, भोलापन, शौक, माँ की कमी आदि की छाप उनकी रचनाओं में भी देखने को मिलती है ।

मौलिक सृजन

'यदि मैं लेखक/कवि होता तो' विषय पर अपने विचार लिखो ।

बच्चो, तुमने अपनी किताबों में प्रेमचंद की मजेदार कहानियाँ पढ़ी होंगी । हम तुम्हें बताते हैं कि प्रेमचंद कैसे थे ? उनका बचपन कैसा था ? उनके बचपन की घटनाओं का असर उनकी कहानियों और बड़े-बड़े उपन्यासों पर कैसे पड़ा ?

दक्षिण के एक हिंदी प्रेमी थे, नाम था-चंद्रहासन । उनके मन में प्रेमचंद के दर्शनों की बड़ी इच्छा थी । एक बार वे काशी आए । प्रेमचंद उन दिनों काशी में ही रहते थे । शाम को वे प्रेमचंद के घर आए । काफी देर बाहर खड़े रहे लेकिन कोई नजर नहीं आया । बेकार खाँसने-खूँसने का भी कोई नतीजा नहीं निकला । तंग आकर दरवाजे पर आए और कमरे में झाँका । अंदर एक आदमी था । वह फर्श पर बैठकर कुछ लिख रहा था । उसके चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूँछें थीं । चंद्रहासन ने सोचा, शायद प्रेमचंद जी इस आदमी को बोलकर लिखाते होंगे । उन्होंने आगे बढ़कर कहा, ''मैं प्रेमचंद जी से मिलना चाहता हूँ ।''

फर्श पर बैठे आदमी ने नजरें उठाकर ताज्जुब से आगंतुक को देखा, कलम रख दी और ठहाका लगाते हुए कहा, ''खड़े-खड़े मुलाकात करेंगे क्या! बैठिए और मुलाकात कीजिए -मैं ही....''

प्रेमचंद जी से ऐसी ही एक मुलाकात बस्ती निवासी ताराशंकर 'नाशाद' ने की थी । उन दिनों प्रेमचंद जी लखनऊ में अमीनुद्‌दौला पार्क के सामने रहते थे । 'नाशाद' साहब उनसे मिलने लखनऊ आए । अमीनुद्‌दौला पार्क के पास उन्हें एक आदमी मिला । उस आदमी ने कहा, ''चलिए, मैं आपको उनसे मिलवा दूँ ।''

वह आदमी आगे-आगे चला और 'नाशाद' साहब पीछे-पीछे । मकान में पहुँचकर उस आदमी ने 'नाशाद' को बैठने के लिए कहा और अंदर चला गया । जरा देर बाद वह कुरता पहनकर निकला और बोला, ''अब आप प्रेमचंद से बात कर रहे हैं...''

ऐसी और भी बहुत-सी घटनाएँ हैं जो प्रेमचंद की बेबाकी, सादगी और भोलेपन की कहानी सुनाती हैं । प्रेमचंद के चरित्र की यही बेबाकी, सादगी और भोलापन उनके कथापात्रों में भी है । उनके साहित्य पर सबसे ज्यादा असर उनके बचपन की घटनाओं का पड़ा है । तुम्हें पता है कि प्रेमचंद का बचपन ठीक तुम लोगों की ही तरह शैतानियों और शरारतों से भरा था । लो, मैं तुम्हें उनके बचपन के चंद वाकयात सुनाता हूँ...

जब तुम बनारस से आजमगढ़ जाने वाली सड़क पर चलोगे तो शहर से करीब चार मील के फासले पर एक गाँव पड़ता है –लमही । यह छोटा–सा गाँव है । इसमें सभी जातियों के पैंतीस–चालीस घर हैं । यही उस गाँव की आबादी है । इसी गाँव में मुंशी अजायबलाल के घर प्रेमचंद जी का जन्म हुआ ।

मुंशी अजायबलाल नेक तबीयत के आदमी थे । घर–बाहर सब जगह वह अपनी बिसात भर दूसरों की मदद करते थे । वैसे बिसात ही कितनी थी – दस रुपए पर डाकमुंशी हुए थे और चालीस रुपये तक पहुँचते–पहुँचते रिटायर हो गए । संयोग से पत्नी भी उनको अपने अनुकूल ही मिली । देखने में जितनी सुंदर, स्वभाव में उतनी ही कोमल ।

लेकिन उन्हें एक दुःख था–उनके बच्चे नहीं जीते थे । दो लड़कियाँ हुईं और दोनों जाती रहीं । गाँव की औरतों ने शोर मचा दिया, ''आनंदी का अपने मैके जाना ठीक नहीं है, वहाँ भूत लगते हैं ।''

भूत–प्रेत की बात तो दीगर है लेकिन यह सच है कि उसके बाद तीसरी लड़की जिंदा रही । उसका नाम सुग्गी था । उसके छह–सात साल बाद शनिवार ३१ जुलाई १८८० को प्रेमचंद का जन्म हुआ । पिता ने इनका नाम धनपत और ताऊ ने नवाब रखा । नवाब में माँ के प्राण बसते थे ।

प्रेमचंद माँ के बेहद लाड़ले थे और शरारत कहिए या चुहल, उनकी घुट्टी में पड़ी थी । आए दिन शरारतें करते रहते और घर पर उलाहना पहुँचता रहता ।

फसल के दिनों में किसी के खेत में घुसकर ऊख तोड़ लाना, मटर उखाड़ लाना रोज की बात थी । इसके लिए खेत वालों की गालियाँ भी खानी पड़ती थीं लेकिन लगता है कि उन गालियों से ऊख और मीठी, मटर और मुलायम हो जाती थीं । उलाहने होते, घर में डाँट–फटकार भी पड़ती लेकिन एक–दो रोज में फिर वही रंग–ढंग ।

ढेला चलाने में भी नवाब बड़े तेज और उस्ताद लड़के थे । टिकोरे पेड़ में आते और उनकी चाँदमारी शुरू हो जाती । ऐसा ताककर निशाना मारते कि दो–तीन ढेलों में ही आम जमीन पर । पेड़ का रखवाला चिल्लाता ही रह जाता और नवाब की मंडली आम बीन–बटोरकर नौ–दो ग्यारह हो जाती । वह लड़कों के सरताज थे । आज भी लोग बखान करते हैं । गुल्ली–डंडे में भी माहिर । एक टोल लगा और गुल्ली वह गई, करीब सौ–डेढ़ सौ गज दूर ।

बचपन में मिले कजाकी की याद उन्हें कभी नहीं भूली । उन दिनों उनके पिता आजमगढ़ की एक तहसील में थे । नवाब पिता के पास

संभाषणीय

विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों पर समाज में होने वाली चर्चाओं के बारे में अपने अभिभावक/शिक्षकों से प्रश्न पूछो ।

थे । डाकिया कजाकी बड़ा ही हँसमुख और जिंदादिल था । वह रोज शाम को डाक का थैला लेकर आता, रात भर रहता और सवेरे डाक लेकर चला जाता । ज्यों ही शाम के चार बजते, नवाब सड़क पर खड़े होकर कजाकी का इंतजार करने लगते । थोड़ी ही देर में कजाकी कंधे पर बल्लम रखे, उसकी झुनझुनी बजाता दिखाई देता । जैसे ही वह उन्हें देखता, दौड़ने लगता । वह भी उसकी ओर दौड़ लगा देते और अगले पल कजाकी का कंधा नवाब का सिंहासन बन जाता । वे अपने आपको हवा के घोड़े पर महसूस करते ।

डाक का थैला रखकर वह बच्चों के साथ किसी मैदान में निकल जाता । उनके साथ खेलता, बिरहे सुनाता और कहानियाँ सुनाता । उसे चोरी, डाके, मारपीट और भूत-प्रेतों की सैकड़ों कहानियाँ याद थीं । उसकी कहानियों में चोर और डाकू सच्चे योद्धा होते थे, जो लूटकर दीन-दुखी प्राणियों का पालन करते थे । नवाब को उसकी कहानियों में ही सबसे ज्यादा मजा आता था । वे किस्से उनके अंदर भविष्य के कहानीकार का बीज रोप रहे थे ।

अब कुछ-कुछ बचपनी शौक देख लिए जाएँ - नवाब को गुड़ खाने का बेहद शौक था । गुड़ चुरा-चुराकर भी खाया करते थे । कहते थे - ''गुड़ मिठाइयों का बादशाह है ।'' गुड़ की चोरी का एक वाकया उन्होंने बयान किया है - ''अम्मा तीन महीने के लिए अपने मैके या मेरे ननिहाल गई थीं और मैंने (अकेले ही) तीन महीने में एक मन गुड़ का सफाया कर दिया था । जाते वक्त अम्मा ने एक मन गुड़ लेकर मटके में रखा और उसके मुँह पर एक सकोरा रखकर मिट्टी से बंद कर दिया । मुझे सख्त ताकीद कर दी कि मटका न खोलना । मेरे लिए थोड़ा-सा गुड़ एक हाँड़ी में रख दिया था । वह हाँड़ी मैंने एक हफ्ते में सफाचट कर दी । मुझे गुड़ का कुछ ऐसा चस्का पड़ गया कि हर वक्त वही नशा सवार रहता । मेरा घर में आना, गुड़ के लिए शामत आना था । एक हफ्ते में हाँड़ी ने जवाब दे दिया । मटका खोलने की सख्त मनाही थी और अम्मा के घर आने में अभी पौने तीन महीने बाकी थे । एक दिन तो मैंने बड़ी मुश्किल से जैसे-तैसे सब्र किया लेकिन दूसरे दिन एक आह के साथ सब्र जाता रहा और मटके की एक मीठी चितवन के साथ होश रुखसत हो गया । अपने को कोसता, धिक्कारता- ''गुड़ तो खा रहे हो, मगर बरसात में सारा शरीर सड़ जाएगा, गंधक का मलहम लगाए घूमोगे, कोई तुम्हारे पास बैठना भी न पसंद करेगा ।'' कसमें खाता-विद्या की, माँ की, भाई की,ईश्वर की मगर सब बेसूद और वह मन भर का मटका पेट में समा गया ।''

लेखनीय

अपने पसंदीदा लेखक की जानकारी संक्षेप में लिखो ।

बालक प्रेमचंद को दूसरा शौक रामलीला देखने का था-इस शौक के बारे में भी उन्होंने खुद ही लिखा है-एक जमाना वह था, जब मुझे भी रामलीला में आनंद आता था । आनंद तो बहुत हल्का शब्द है, उसे उन्माद कहना चाहिए । संयोगवश उन दिनों मेरे घर से बहुत थोड़ी दूरी पर रामलीला का मैदान था और जिस घर में लीलापात्रों का रूप-रंग भरा जाता था, वह तो मेरे घर से बिल्कुल मिला हुआ था ।

दो बजे दिन से पात्रों की सजावट होने लगती थी । उनकी देह में रामरज पीसकर पोती जाती, मुँह में पाउडर लगाया जाता और पाउडर के ऊपर लाल, हरे, नीले रंग की बुँदकियाँ लगाई जाती थीं । एक ही आदमी इस काम में कुशल था । वही बारी-बारी से तीनों पात्रों (राम, लक्ष्मण, सीता) का शृंगार करता था । रंग की प्यालियों में पानी लाना, रामरज पीसना, पंखा झलना मेरा काम था । रामचंद्र पर मेरी कितनी श्रद्धा थी ! अपने पाठ की चिंता न कर उन्हें पढ़ा दिया करता था, जिससे वह फेल न हो जाएँ । मुझसे उम्र ज्यादा होने पर भी वह नीची कक्षा में पढ़ते थे । लेकिन वही रामचंद्र (निषाद लीला में) नौका पर बैठे ऐसे मुँह फेरे चले जाते थे, मानो मुझसे जान-पहचान ही नहीं । नकल में भी असल की कुछ न कुछ बू आ ही जाती है । रामलीला समाप्त हो गई थी । राजगद्दी होने वाली थी । रामचंद्र की इन दिनों कोई बात भी न पूछता था, न घर ही जाने की छुट्टी मिलती थी । चौधरी साहब के यहाँ से एक सीधा कोई तीन बजे दिन को मिलता था, बाकी सारे दिन कोई पानी को भी नहीं पूछता । मेरी श्रद्धा ज्यों की त्यों थी ।

मेरी दृष्टि में वह अब भी रामचंद्र ही थे । घर पर मुझे खाने की कोई चीज मिलती, वह लेकर रामचंद्र को दे आता । कोई मिठाई या फल मिलते ही बेतहाशा चौपाल की ओर दौड़ता । चलते समय भी रामचंद्र जी को कुछ नहीं मिला । मेरे पास दो आने पैसे पड़े हुए थे । मैंने पैसे उठा लिए और जाकर शरमाते-शरमाते रामचंद्र को दे दिए । उन पैसों को देखकर रामचंद्र टूट पड़े, मानो प्यासे को पानी मिल गया । वही दो आने पैसे लेकर तीनों मूर्तियाँ विदा हुईं । केवल मैं ही उनके साथ कस्बे के बाहर तक पहुँचाने आया ।

इस तरह माँ और दादी के प्यार में लिपटे हुए प्रेमचंद के बचपन के दिन बड़ी मस्ती में बीत रहे थे । आसमान से इस बच्चे का सुख न देखा गया और उसी साल माँ ने बिस्तर पकड़ लिया । नवाब अभी पूरे आठ साल के भी नहीं हुए थे कि माँ चल बसी और उसी दिन वह नवाब, जिसे माँ पान के पत्ते की तरह फेरती थीं-कभी सर्दी से, कभी

पठनीय

'मानसरोवर' कहानी संग्रह द्वितीय खंड से कोई एक कहानी कक्षा में पढ़कर सुनाओ ।

गर्मी से और कभी सिहानेवालों की डाँट से । देखते-देखते सयाना हो गया । अब उसके सिर पर तपता हुआ नीला आसमान था, नीचे जलती हुई भूरी धरती थी । पैरों में जूते न थे, बदन पर साबुत कपड़े न थे, इसलिए नहीं कि यक-ब-यक पैसे का टोटा पड़ गया था बल्कि इसलिए कि इन सब बातों की फिक्र रखने वाली माँ की आँखें मुँद गई थीं, बाप यों भी कब माँ की जगह ले पाता है ? उसपर वे काम के बोझ से दबे रहते ।

बारह-तेरह वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते उनमें वे बुराइयाँ आ गईं, जो बिना माँ के बच्चों के अंदर आ जाती हैं । पता नहीं माँ का प्यार किसी अनजाने ढंग से बच्चे को सँवारता रहता है । दोनों में से किसी को पता नहीं चलता, पर वह छाया अपना काम करती रहती है । वह प्यार छिन जाए, सिर पर से वह हाथ हट जाए तो एक ऐसी कमी महसूस होती है जो बच्चे को अंदर से तोड़ देती है और नवाब भी अंदर से टूट गए । यह कमी इतनी गहरी, इतनी तड़पाने वाली थी कि बार-बार उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में ऐसे पात्रों को रचा, जिनकी माँ सात-आठ साल की उम्र में जाती रही और फिर उनकी दुनिया सूनी हो गई । 'कर्मभूमि' का अमरकांत ऐसा ही पात्र है ।

'ईदगाह', 'बड़े भाई साहब', 'कर्मभूमि', 'गबन' और 'गोदान' ऐसी रचनाएँ हैं, जिनमें नवाब (प्रेमचंद) के बचपन की शरारतें, भोलापन, शौक और माँ की कमी समाई हुई है । और भी बहुत-सी कहानियाँ हैं, जिनमें उनका बचपन खेलता हुआ नजर आता है ।

— o —

श्रवणीय

रेडियो, यू-टयूब पर प्रेमचंद जी की किसी कहानी का नाट्य रुपांतर, उसमें निहित प्रमुख विचार, विवरण प्रमुख बिंदु सुसंगति से व्यक्त करो ।

शब्द वाटिका

दीगर = अन्य, दूसरा
टिकोरा = आम का छोटा कच्चा फल
चाँदमारी = किसी तल पर बने हुए बिंदुओं पर गोली चलाने या निशाना लगाने का अभ्यास
बल्लम = बरछा, भाला

मुहावरे

नौ-दो ग्यारह होना = भाग जाना
हवा के घोड़े पर सवार होना = कल्पना करना
ठहाका लगाना = जोर से हँसना
शामत आना = विपत्ति आना
सफाचट करना = खत्म करना

* सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–

(१) संजाल पूर्ण करो :

पाठ में उल्लिखित प्रेमचंद जी की रचनाएँ

(२) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

रामलीला के पात्रों की सजावट संबंधी बातें

(३) उत्तर लिखो :

१. प्रेमचंद जी के शौक

२. इनमें गुड़ रखा था

(४) संक्षेप में लिखो :

१. प्रेमचंद जी का बचपन

२. डाकिया कजाकी

३. रामलीला

(५) कजाकी को इनकी कहानियाँ याद थीं –

(६) नाम लिखो :

प्रेमचंद
- की माता जी
- के पिता जी
- की बहन

सदैव ध्यान में रखो

बचपन के कुछ प्रसंग तथा घटनाएँ संस्मरणीय होती हैं ।

उपयोजित लेखन

विद्‍यालय में 'वृक्षारोपण अभियान' के उपलक्ष्य में वृक्षारोपण करने हेतु अपने विद्‍यालय के प्रधानाचार्य की अनुमति प्राप्त करने हेतु पत्र लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

हिंदी के प्रसिद्‍ध चार साहित्यकारों की जानकारी वाले चार्ट बनाओ ।

MFZLDU

भाषा बिंदु

समास पढ़ो और समझो :

तत्पुरुष समास

१. सैनिक देशरक्षा के लिए सीमा पर तैनात हैं ।
२. मधुर आवाज ईश्वरप्रदत्त होती है ।
३. गौशाला में बहुत गायें थीं ।
४. हमें पराधीन नहीं होना चाहिए ।

१. देश की रक्षा
२. ईश्वर द्वारा प्रदत्त
३. गौ के लिए शाला
४. पर के अधीन

उत्तरपद प्रधान तथा पूर्वपद गौण होता है ।

द्विगु समास

१. देश की शान तिरंगा है ।
२. पंचतंत्र की बाल-कहानियाँ लोकप्रिय हैं ।
३. गर्मी के दिनों में दोपहर को विश्राम आवश्यक है ।
४. बच्चे चौराहे पर खड़े थे ।

१. तीन रंगों का समाहार
२. पंच तत्त्वों का समाहार
३. दो पहरों का समाहार
४. चार रास्तों का समाहार

समस्त पद के पूर्व पक्ष में संख्यावाचक विशेषण

बहुव्रीहि समास

१. उल्लू निशाचर प्राणी है ।
२. बारहसिंगा जंगली प्राणी है ।
३. पतझड़ में वृक्ष सूने हो जाते हैं ।
४. गणेश जी को गजानन भी कहते हैं ।

१. निशा में विचरण करने वाला
२. बारह सींगोंवाला
३. झड़ जाते हैं पत्ते जिस ऋतु में
४. हाथी जैसा मुख है जिसका

पहला पद और दूसरा पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत

द्वंद्व समास

१. सच्चा दोस्त सुख-दुख में साथ देता है ।
२. स्वस्थ शरीर में स्वस्थ तन-मन होता है ।
३. माँ के लिए उसका बच्चा छोटा-बड़ा नहीं होता ।
४. हमें दाल-रोटी बहुत पसंद है ।

१. सुख और दुख
२. तन और मन
३. छोटा और बड़ा
४. दाल और रोटी

समस्त पद में दोनों पद समान होते हैं

अव्ययीभाव समास

१. गांधीजी आजीवन देशसेवा में जुटे रहे ।
२. बच्चे ने भरपेट भोजन किया ।
३. सभी को यथाशक्ति कार्य करना चाहिए ।
४. प्रतिदिन प्रार्थना करनी चाहिए ।

१. जीवन भर
२. पेट भर
३. शक्ति के अनुसार
४. प्रत्येक दिन

पहला पद अव्यय तथा प्रधान होता

कर्मधारय समास

१. अधपका भोजन नहीं खाना चाहिए ।
२. खिलौना बच्चे को प्राणप्रिय होता है ।
३. महापुरुषों की वाणी प्रेरणादायी होता है ।
४. तालाब में नीलकमल मिला है ।

१. आधा है जो पका
२. प्राणों के समान प्रिय
३. महान है जो पुरुष
४. नीला है जो कमल

पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य